Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

शिमला ज़िला की लुप्त होती परम्परागत धार्मिक लोकगाथात्मक गायन शैलियों का संस्कृति पर प्रभाव

DR. MADAN LAL[1] & DR. BINNI CNAND[2]

Gust Faculty Lecturer, Deptt. of Music HPU Shimla
Music Teacher, Jawahar Navodaya Vidyalaya, Serchhip, Mizoram

सार

लोकगाथाओं का उद्भव सर्वप्रथम तब हुआ, जब अविभक्त और एक इकाई के रूप में था। इस कारण लोकगाथाएं प्रारम्भ में समूचे समाज की सम्पति थी, सभी इन्हें गाते और अपनी ओर से उनमें कुछ न कुछ जोड़ते-घटाते थे। इस तरह एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी और कण्ठानुकण्ठ यात्रा करते रहने के कारण उनका रूप नित्य परिवर्तनशील रहा। बाद में समाज के वर्ग विभक्त हो जाने पर उच्च वर्गों के बीच कुछ विशेषज्ञों, कवि, चारण आदि द्वारा साहित्य की रचना होने लगी और साहित्य उनका वैयक्तिक कृतित्व माना जाने लगा, अब वह समूचे समाज की सम्पत्ति नहीं रह गई, परन्तु सामान्य जनमत में जो अभी भी एक इकाई के रूप में थी और शिक्षा तथा शिष्ट संस्कारों द्वारा परम्परा विरहित नहीं हुई थी, वे पुरानी लोकगाथाएं कण्ठानुकण्ठ विकसित होती रही। लिखने-पढ़ने की प्रथा न होने से लोकगाथाएं अलिखित रूप में ही बनी रही। इस कारण इनकी प्राचीन हस्तलिखित प्रतियां नहीं मिलती है। लोकगीतों की भान्ति लोकगाथाओं में भी समय-समय पर लोक रचनाकारों और लोकगायकों द्वारा परिवर्तन तथा संवर्धन किया जाता है। लोकगाथाओं के मूल रूप में लोक रचनाकारों द्वारा इतना अधिक परिवर्तन किया जाता है कि उसके मौलिक रूप का पता ही नहीं चलता है। इस प्रकार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी, एक स्थान से दूसरे स्थान और एक कण्ठ से दूसरे कण्ठ तक जाते-जाते मूल रूप में कुछ परिवर्तन होकर भी लोक गाथाएं जीवित हैं। वास्तव में अलिखित साहित्य लोकगाथा के रूप में शताब्दियों से समाज के आदर्शों को स्थिर रखने में सहायक सिद्ध हुआ है। लोकगाथाएं हमारे सामने युग विशेष तथा जाति विशेष का बोध करवाती हैं। इनमें सच-झूठ, प्रेम-घृणा, द्वेष आदि को पूरी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया जाता है। लोकगाथाओं में ग्रामीण जनता की भोली-भाली, औपचारिकताओं से दूर, अनपढ़ एवं मासूम जनता के अनुभवों की सहज अभिव्यक्ति मिलती है। इसलिए इनमें स्थानीय मान्यताओं, विश्वासों और सामाजिक परम्पराओं का उल्लेख पूर्ण रूप से रहता

भूमिका

भारतवर्ष के उत्तरी छोर पर हिमालय के आँचल में बसा हिमाचल प्रदेश बारह जनपदों की सुन्दर पारम्परिक संस्कृति का संगम स्थल है। दुर्गम जनजातिय क्षेत्रों लाहौल, किन्नौर, पांगी, भरमौर से लेकर बिलासपुर, कांगड़ा, हमीरपुर, ऊना के मैदानी क्षेत्र तथा बहुरंगी लोकगायन परम्पराओं में समृद्ध सिरमौर, सोलन, मण्डी, कुल्लू व शिमला जनपद, यहां की संस्कृति व जनजीवन से साक्षात्कार करवाते है। आज इक्कसवी शताब्दी की चकाचैंद में जीवन यापन करना मानव जाति की मज़बूरी है। यदि हम पुरातन के पिटारे को खोलकर अनावश्यक बखान करते रहे तो शायद प्रगतिशील समाज व वैज्ञानिक सोच के आगे हम परिहास के पात्र न बन जाए ऐसा सोचने पर भी हमें मज़बूर होना पड़ता है।

आज न केवल हिमाचल प्रदेश अपितु सम्पूर्ण भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं पर आवश्यकता से अधिक पाश्चात्य रंग दृष्टिगोचर होने लगा है। हम अपनी आधुनिक पीढ़ी पर बिना किसी अपराध बोध के दोषारोपण करते है। लेकिन वास्तविक सत्य है कि हमने आने वाली पीढ़ियों को विरासत में क्या सौंपा है। इसका गहराई से मन्थन अति आवश्यक है। इसी क्रम में यदि हिमाचल प्रदेश के ज़िला शिमला की पारम्परिक लोक गायन शैलियों की ओर दृष्टिपात किया जाए

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

तो ऐसा प्रतीत होता है कि अनेक लोक गायन शैलियों का इस हद तक पाश्चात्य करण कर दिया गया है कि उनका वास्तविक स्वरूप हमें इतिहास के पन्नों में केवल और केवल लिखित रूप में प्राप्त होता है। किन्तु क्रियात्मक पक्ष के कलाकार काल के गर्त में समाकर उन कृतियों को सदा-सदा के लिए वीरान की स्थिति में छोड़ गए है।

लोकगाथा

भारतीय लोक साहित्य में लोकगाथाओं का महत्वपूर्ण स्थान है, जिनकी परम्परा अति प्राचीन है। जब से मानव ने अपने भावों को परस्पर व्यक्त करने के लिए वाणी का प्रयोग आरम्भ किया होगा, तभी से भाषा ने भी अपना स्वरूप बनाया होगा और लोकगाथा का जन्म हम उसी समय से मान सकते है। लोकगाथाओं की परिधि संसार की सीमा के साथ-साथ आदिकाल से लेकर आज तक बढ़ती जा रही है। संस्कृति एवं मानव सभ्यता के ज्ञान की नसिम तथा अध्यात्मवाद की सकल अभिव्यंजना लोकगाथाओं के माध्यम से सहज और सम्भव है। आज की ग्राम्य जीवन में विशेष अवसरों पर लोकगाथाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। लोकगाथाएं जनसमुदाय के भावुक तथा संवेदनशील दृश्य के स्वभाविक उदगार, जीवन की स्वच्छन्द और सहज रचनाएं है। इनमें न तो किसी प्रकार की दार्शनिकता का आग्रह रहता है और न ही ये किसी प्रकार की विचारधारा को प्रतिपादित करती है। मानवीय जीवन के हर्ष-विषाद, सुख-दुख, प्रेम-प्रसंग, विरह-वेदना और जीवन की यथार्तपूर्ण घटनाएं आदि लोकगाथाओं में सहज प्रतिक्रियाओं के माध्यम से मुखरित होती है।

लोकगाथा कथात्मक गीत होने के कारण लोक साहित्य का एक अभिन्न अंग माना जाता है। ये लोकगाथाएं किसी व्यक्ति विशेष, प्राकृतिक घटनाओं, धार्मिक और सामाजिक घटनाओं से सम्बन्धित होती है। गेयात्मक होने के कारण इन्हे किसी विशेष अवसरों पर ही गाया जाता है। वस्तुतः लोकगाथाओं में लगभग सम्पूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति होती है। इसलिए अधिक लम्बी होने के कारण लोकगीतों की भान्ति जनसमुदाय की कण्ठमाला बनकर कुछ एक जातियों तथा व्यक्तियों के दायरे में सीमित रहकर उनकी ये लोकगाथाएं जीविकोपार्जन का साधन भी बन गई है।

लोकगाथा विशेष जनसमुदाय की एक पद्यात्मक तथा गेयात्मक कहानी है। अनेक पौराणिक व धार्मिक लोकगाथाओं का भण्डार भी छन्दोबद्ध होकर महाकाव्य के रूप में प्रस्तुत हुआ है, जैसे-रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों की लोक गाथाओं में सम्पूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति मिलती है।

लोकगाथा का अर्थ

लोकगाथा की परम्परा वैदिक युग से चली आ रही है। इसलिए इसके अर्थ को भी वैदिक युग से ही देखा जा सकता है। ''ऋग्वेद में 'गाने वाले' के अर्थ में गाथिन शब्द का प्रयोग किया गया है। वैदिक साहित्य में 'गाथिन' का प्रयोग उस व्यक्ति के लिए किया गया है, जो किसी प्राचीन आख्यान या कला को कहने वाला हो।'' अतः 'लोक' के साथ 'गाथा' शब्द एक विशेष अभिप्रायः को लेकर प्रयुक्त होता है।

लोकगाथा के अर्थ को लेकर विद्वानों के भिन्न-भिन्न विचार है। अंग्रेजी भाषा में लोकगाथा को ''बैलेड'' शब्द का प्रयोग किया गया है। इसलिए अंग्रेजी विद्वानों द्वारा लोकगाथा को निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत की हैः-

1. ''बैलेड, का काव्य रूप का नाम है, जिसमें सीधे-सीधे छन्दों में सीधी, सरल कथा कही गयी हो।

2. बैलेड वह कथा है, जो गीतों में कही गयी हो।

3. बैलेड एक साधारण कथात्मक गीत है जिसकी उत्पत्ति संदिग्ध होती है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

हिन्दी शब्द कोशों में लोकगाथा एवं गाथा का अर्थ निम्नवत् रूप से दिया गया हैः-

मानक हिन्दी शब्दकोश में लोकगाथा का अर्थ है- ''परम्परा से चले आये हुए वे गीत आदि जो लोक में प्रचलित हों।''

''हिन्दी में यह शब्द वृत्तांत या जीवनी के अर्थ में प्रयुक्त होता है। गाथाओं में आख्यानों का सूक्षम उल्लेख था। संकेत होने के कारण कालान्तर में यह शब्द आख्यान कहानी या जीवनी-वृत्तांत के ही अर्थ में प्रयुक्त होने लगा, ऐसा प्रतीत होता है।''

लोकगाथा शब्द में 'लोक' शब्द रचियता का सूचक है तथा 'गाथा' शब्द गीत अथवा काव्य का द्योतक है। अर्थात् लोक जगत में प्रचलित गीत व लोक द्वारा निर्मित गीत। 'लोक' शब्द को व्यष्टिगत एवं समष्टिगत दोनों अर्थाेंं में लिया जा सकता है।

वासुदेव शरण के शब्दों में, ''लोक'' शब्द को एक सागर की संज्ञा दी है। जिस प्रकार सागर में अनगिनत बहुमूल्य निधियां होती है उसी प्रकार लोक साहित्य में भी हम अपनी सभ्यता का पहलू देख सकते है। गाथा शब्द वैदिक और प्राचीन है। 'गाथिन' शब्द का प्रयोग वेदिक साहित्य में उस व्यक्ति के लिए किया गया जो किसी प्राचीन आख्यान या कला को कहने वाला है।''

लोकगाथा का मूल अर्थ उस गीत से है, जो लयबद्ध होकर, नृत्य के साथ-साथ, साज-बाज के सहित गाया जाता है। बाद में इसका प्रयोग सामूहिक रूप से गाये जाने वाले गीत के लिए भी होने लगा। लोकगाथा की लोकप्रियता खेतों में काम करते मज़दूर को उत्साह प्रदान करने के लिए अधिक पाई जाती थी। ग्रामीण समुदाय में भिन्न-भिन्न वाद्यों के साथ इसका गान होता था, जिसे आज भी जनता बहुत पसन्द करती है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक गाथा शब्द में विशालता गेयता, विशेष तथा कलात्मकता इन तीन तत्त्व की त्रिवेणी आवश्यक है। गाथा में लोक विशेष लगने से ऐसी गाथा का भान होता है जिसमें लोकमानसीय तत्त्व हों। अतः लोकगाथा शब्द लोक साहित्य की इस आख्यानपूर्ण गेय विधा का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है और इसी कारण हम इसके अन्य नामों से सहमत न होकर मात्रा लोकगाथा नाम ही उचित मानते हैं।''

लोकगाथा का वर्गीकरण

''लोकगाथाओं को आकार और विषय की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। आकार की दृष्टि से हम इन्हें उपभागों में बाँट सकते हैः- लघु और बृहत्। लघु गाथाओं का आकार छोटा होता है, जबकि बृहत गाथाएं प्रबन्धात्मक काव्य के समान बड़ी हुआ करती है।

लोक गाथाओं को अनेक विद्वानों ने अपने-अपने मतानुसार अनेक वर्गों में विभाजित किया है। इसलिए भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों के वर्गीकरण का अध्ययन अति आवश्यक है ताकि लोकगाथाओं को कुछ गहराई से जाना जा सके।

प्रो0 किटरेज ने लोकगाथाओं का वर्गीकरण निम्नवत् ढंग से प्रस्तुत किया हैः-

1. चारण गाथाएं (मिस्ट्रेल बैलेडस)
2. परम्परागत गाथाएं (ट्रेडिशनल बैलेडस)

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

प्रो0 किटरेज का वर्गीकरण अति संक्षिप्त है। इसके अन्तर्गत सभी महत्त्वपूर्ण लोकगाथाओं को सम्मिलित करना सरल नहीं है।

प्रो0 गूमर ने लोकगाथाओं को छः भागों में वर्गीकृत किया हैः

1. प्राचीनतम् गाथाएं (ओल्डेस्ट बैलेडस)
2. कौटुम्बिक गाथाएं (बैलेडस आफ किनशिप)
3. अलौकिक गाथाएं (कोरोनेच एण्ड बैलेड्स आफ दी सुपरनेचुरल)
4. निजंधरी गाथाएं या पौराणिक गाथाएं (लीजेंडरी बैलेडस)
5. सीमान्त गाथाएं (बार्डर बैलेडस)
6. आरण्यक गाथाएं (ग्रीनउड बैलेडस)

प्रो0 गूमर का वर्गीकरण व्यापक है। इसलिए इसमें अनेक गाथाएं समाविष्ट हो सकती है। पदमचन्द्र कश्यप ने कुल्लूई लोकसाहित्य में लोकगाथाओं का वर्गीकरण निम्नवत् किया हैः

1. धार्मिक लोकगाथाएं
2. पौराणिक एवं ऐतिहासिक
3. वीर लोकगाथाएं
4. पे्रमात्मक लोकगाथाएं

कश्यप द्वारा किया गया वर्गीकरण पर्याप्त सन्तुलित एवं स्पष्ट है। इन्होंने एक ज़िला विशेष के लोकसाहित्य का अध्ययन किया है, अन्यथा लोकगाथाओं का वर्गीकरण इससे भी विस्तृत हो सकता है।

लोकगाथाओं के वर्गीकरण का जहां तक प्रश्न है विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से वर्गीकरण करने का प्रयास किया है तथा लोकगाथाओं को कई भागों में बांटा है। ज़िला शिमला में लोकगाथाओं का प्रचलन परम्परागत है तथा इनका वर्गीकरण निम्नवत् वर्गों में किया जा सकता हैः

1. धार्मिक एवं देव-लोकगाथाएं
2. वीरात्मक लोकगाथाएं
3. प्रणयात्मक लोकगाथाएं
4. ऐतिहासिक लोकगाथाएं
5. सतीत्व प्रधान लोकगाथाएं
6. विविध लोकगाथाएं

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

इस शोध पत्र में उपरोक्त सभी प्रकार की लोकगाथाओं में से केवल धार्मिक लोकगाथाओं पर ही प्रकाश डाला जाएगा।

संस्कृति की अवधारणा

जिस प्रकार किसी व्यक्ति की आदतें और उसकी अभिव्यक्ति का ढंग उसके चरित्र के धोतक होते हैं, वैसे ही किसी देश और प्रदेश की संस्कृति वहां के रीति-रिवाज़, रहन-सहन वहां की सामाजिक व्यवस्था के परिचायक होते हैं।

इतिहास के पन्नों में जब भी हम विश्व इतिहास की संस्कृति की बात करते है तो सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति को सबसे प्रमुख माना गया है। भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक जीवन व्यवस्था भिन्न-भिन्न है।

उत्तरी भारतीय क्षेत्र में बसा राज्य हिमाचल प्रदेश उन सब राज्यों में एक ऐसा राज्य था जो बाहरी रीति-रिवाज़ों से काफी हद तक प्रभावित नहीं हुआ। हिमाचल प्रदेश एक बहु सांस्कृतिक और बहु भाषी राज्य है यह एक पहाड़ी राज्य है इसलिए यहां पहाड़ी भाषा बोली जाती है। पहाड़ी भाषा के अनुरूप यहां छोटे-छोटे क्षेत्रों में अनेक बोलियां बोली जाती है। साल भर मनाए जोने वाले मेले और त्यौहार हिमाचल प्रदेश के लोगों के जीवन के अभिन्न अंग है। इनका स्वरूप धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक है। इनसे सामाजिक सहयोग की आवश्यकता की पूर्ति होती है जो कि आर्थिक भरण-पोषण के लिए ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण के लिए भी जरूरी है। प्रदेश के परम्परागत लोकगायन अथवा लोकगाथात्मक गायन शैलियां और प्रदेश की समृद्ध संस्कृति एक-दूसरे के पूरक है।

प्रदेश की प्राचीन संस्कृति, लोकगाथाएं और लोक गायन शैलियां हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग रहे हैं लेकिन वर्तमान चकाचैंद में परम्परागत व हमारी संस्कृति की परिचायक उपरोक्त लोक गायन शैलियां लुप्त होती नजर आ रही है। जिसका प्रभाव हमारी संस्कृति पर भी पड़ रहा है। तेज़ी से बढ़ते इस प्रभाव को मध्य नज़र रखते हुए उन लुप्त होती पारम्परिक लोक गायन शैलियों व प्राचीन संस्कृति के संरक्षण को लेकर उरोक्त सभी प्रकार की गायन शैलियों को संजो कर रखने के बारे में हम सभी को सोचना चाहिए और इस ओर सकारात्मक कदम उठाना चाहिए।

लोक गायन शैलियां व इनका वर्तमान अस्तीत्व

संगीत का विद्यार्थी एवं हिमाचल प्रदेश की सौंधी मिट्टी का कर्ज़दार होने के नाते यदि हिमाचल प्रदेश की लुप्त होती पारम्परिक गायन शैलियों यथा चम्बा के ऐंचली गीत, पांगी की सुगली और व्यागेण, कांगड़ा के विवाह सम्बन्धी गीत जिन्हें 'घोड़ी' कहा जाता है, कुल्लू की पन्तू व नैणी, सिरमौर की हारूल व झूरी तथा शिमला ज़िला के ऊपरी क्षेत्रों की द्रुड़ी व बवारनी, छहाड़ी तथा बंऊरू इत्यादि प्रचलित है। अपनी बात की पुष्टि में शिमला जनपद के ऊपरी क्षेत्र में प्रचलित कुछेक पारम्परिक लोकगाथात्मक गीतों को प्रस्तुत किया जा रहा है जो इस प्रकार हैः- लोकगाथा गीत जिसे स्थानीय लोग महाभारत के कर्ण पात्र से जोड़कर माघ मास (जनवरी-फरवरी) में देवालय के प्रांगण में गातें है। 'सतैरण' नाम से प्रचलित इस गाथा गीत का वर्णन निम्न हैः-

पाओ-पाओ धारौ एओ रे नगरी रो,

खोड़ेया मेरया रे जिंऊरा

कैंई नहीं तू पाऐ, रा रे आंऊदा

तैरदा जिंऊर लागा रे बामदा

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

पाऐ रे लागो रे डेंऊदा

बूड़ेया मेरया रे बापूआ

पाऐ के ऐईदे रे।।

स्वरलिपि

रे	रे	रे	रे	सा	नि	सा	सा	रे	रे	सा	सा
पा	ओ	पा	ओ	धा	रौ	ए	ओ	रे	न	ग	री
नि	प़	ग	ग	ग	ग	ग	ग	रे	रे	रे	रे
रो	ऽ	खो	ड़ि	या	खो	ड़ि	या	मे	रि	या	रे
रेसा	सा	नि़	-	सा	नि़	सा	सा	रे	रे	सा	सा
जिंऊ	रा	ऽ	ऽ	कैं	ई	न	हीं	तू	पा	ऐ	रा
रे	रे	सा	सा	नि़	प़	-	-	-	-	-	-
रे	आ	ऊं	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
			2			0			3		

भावार्थ: प्रस्तुत लोकगीत सूतपुत्र कर्ण की जीवन गाथा से सम्बन्धित है। गीत के अन्तर्गत कर्ण और एक राक्षस की लड़ाई का वर्णन किया गया है। जिसमें राक्षस अपने बचाव में प्राणों के बदले अपने पिता का राजपाठ, दिव्य धनुषवाण व बाई लछमा (राक्षस की बहन) का दान तथा घोड़े देने का प्रस्ताव रखता है और वादा करता है कि वह उस गांव को छोड़कर चला जाएगा जहां पर प्रतिदिन उसके भोजन में गांव के किसी न किसी व्यक्ति को जाना पड़ता था।

शिवजी से सम्बन्धित गीत

चाल़ौ माहदेओ धौतारी फेरदौ-2

हाथे पाओ गूरका शोटौ-2

काचै पाए पौथेरा झोल़े-2

कानै पाए कूण्डल़ा रे जोड़े-2

गोल़ै पाए हे जौप माल़ा-2

कानै पाए सूना-चांदीये नादा-2

शिरे महादेवै पैहानौ ताज़ा-2

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

स्वरलिपि

1	2	3	4	5	6
				ग	ग
				चा	लौ
सारे	सा	ध़	ग	ग	ग
महा	दे	ओ	धौ	ता	री
रेग	रे	ग	सा	रे	रे
फेर	दौ	ऽ	ऽ	चा	लौ
सासा	ग	ग	रेग	रे	सा
महा	दे	ओ	धौऽ	ता	री
सारे	सा	-	-		
फेर	दौ	ऽ	ऽ		
		2			

भावार्थ: इस गीत में महादेव की पृथ्वी परिक्रमा का वर्णन किया गया है। कहा जा रहा है कि महादेव पृथ्वी की परिक्रमा के लिए निकल रहे हैं। उन्होंने हाथ में एक डंडा, कन्धे पर झोली, कान में कुण्डल, गले में माला पहनी हुई है। कन्धे पर सोने-चांदी की नाद और सिर में ताज पहनकर भगवान शिव पृथ्वी भ्रमण के लिए निकल पड़े हैं।

रामायण से सम्बन्धित गीत

सीता हरण

रामा जी रूज़ौ बौणै हेड़ियौ ना, लच्छमणा रूज़ौ कारोधै, आंगणा दी भैशौ स नू मातौ ना।

लाए जागौ किन्दारियौ रागा, आंगणा दी भैशौ स नू मातौ ना।

लाए जागौ किन्दारियौ रागा, बैहरै ता निकाल़ै तू सीतालै ना।

रूका मांगै डौबूआरे भीखा, भूज़ापौतियै होई हामा भीकाशू ना।

रूका मांगै डौबूआरे भीखा, थाल़ा भी ता भौरे आणे रापैईयै ना।

गाशा लाए मूरियै टीका, थाल़ा भी ता भौरे आणे रापैईयै ना।

गाशा लाए मूरियै टीका, दाकणौ ता गाड़े राणियै पैचू ना।

बांउऔं गाड़े दैये हाथा, आगानीय शाल़ौ तेरौ सूनूअ ना।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

रामे ज़ौल़ा लोकमोणे खाटा, तीरी बाती देखा राणे सीतालै ना।

देणै माशैन्दाल़ीयै फाल़ा, आगानीय शाल़ौ मेटौ सूनूऐं ना।

मारै गे तू जांगाला दी आए, राणीए बोलू तौलै सीतालै ना।

थारौ जांगल बांउंऔं ना हेटौ, दौशू बीता मूऔं सौ नू ठाकारा ना।'

स्वरलिपि

1	2	3	4	5	6
मम	म	-	रेरे	रे	म
रामा	जी	ऽ	रूज़ौ	बौ	णै
रेसा	सा	-	सा	-	-
हेड़ि	यौ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
मम	म	म	रेम	रे	म
लच्छ	मो	णा	रू	ज़ौ	का
प	-	-	म	-	-
रो	ऽ	ऽ	धै	ऽ	ऽ
मम	म	म	रेसा	सा	सा
आंग	णा	दी	भैशौ	स	नू
म	सा	-	सा	-	-
मा	तौ	ऽ	ना	ऽ	ऽ

2

भावार्थः यह छहाड़ी गीत सीता हरण से सम्बन्धित है। इसमें कहा गया है कि श्री राम वन में स्वर्ण मृग के शिकार में गए हुए है और लक्ष्मण को भी उनकी आवाज़ सुन कर सीता माता वन में भेज देती है और लक्ष्मण भी क्रोधित होकर वन में चले जाते है और उधर कुटिया के आंगन में रावण साधु वेश में आ जाता है। रावण वहां माता सीता की कुटिया के आंगन में आकर आवाज़े लगा रहा है कि बाहर निकलो और मुझे भिक्षा दो। क्या आप भिक्षा नहीं देंगे अपनी कुटिया से एक साधु को खाली हाथ भेजेंगे। फिर वह साधु कह रहा है कि मुझे अन्न से भरी हुई थली में कुछ रूपये के साथ मुझे तिलक आदि लगाकर विदा कर दो। तभी सीता माता खिड़की से देखती है कि कौन है? तभी वह साधु को देखती है और उस साधु के लिए भिक्षा लेकर बाहर आती है। जैसे ही वह भिक्षा देने के लिए अपना हाथ बढ़ाती है तो वह साधु (रावण) उसकी थाल को गिराकर उसे पकड़ कर धोखे से अपने साथ ले जाता है और कहता है कि तू हमारे जंगल में आई है यहां

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 09, Issue 03, June 2022
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2022

तुझे बचाने वाला कोई नहीं आऐगा। इस बात पर सीता कहती है कि हे रावण तुम्हारा ये जंगल इतना भी घना नहीं है कि मेरे श्री राम मुझे ढंढ न पाए।

उपसंहार

वास्तव में अलिखित साहित्य लोकगाथा के रूप में शताब्दियों से समाज के आदर्शों को स्थिर रखने में सहायक सिद्ध हुआ है। लोकगाथाएं हमारे सामने युग विशेष तथा जाति विशेष का बोध करवाती हैं। इनमें सच-झूठ, प्रेम-घृणा, द्वेष आदि को पूरी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया जाता है। लोकगाथाओं में ग्रामीण जनता की भोली-भाली, औपचारिकताओं से दूर, अनपढ़ एवं मासूम जनता के अनुभवों की सहज अभिव्यक्ति मिलती है। इसलिए इनमें स्थानीय मान्यताओं, विश्वासों और सामाजिक परम्पराओं का उल्लेख पूर्ण रूप से रहता

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अत्री डा, राजेन्द्र (2012). हिमाचल प्रदेश एक बहुआयामी परिचय, द्वितीय संस्करण, सरला पब्लिकेशन शिमला

कपूर डा, बी0 एल0 (1994). हिमाचलः इतिहास और परम्परा, द्वितीय संस्करण, सन्मार्ग प्रकाशक दिल्ली

गुप्ता डा, चमन लाल (2010). हिमाचल लोकसंगीत मंजूषा, निर्मल पब्लिकेशन्स शाहदरा दिल्ली

चोपड़ा हरविन्द्र सिंह (1996). हिमाचल दर्पण ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, शिवहरि प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली

ठाकुर डा, सूरत राम (2004.)हिमाचल की देव संस्कृति (मंदिर, मेले व त्यौहार), एच0 जी0 पब्लिकेशन, नई दिल्ली

साक्षात्कार

श्री प्रेमलाल, गांव जनहान डाकघर देओठी तहसील ठियोग ज़िला शिमला हि0 प्र0।

श्री नाथी राम, गांव मतैकली, डाकघर सुरड, तहसील ननखड़ी ज़िला शिमला हि0 प्र0।